राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
(An Autonomous Institution of the Ministry of Culture, Govt. of India)
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
Bahawalpur House, Bhagwandas Road, New Delhi 110 001

Guidelines for the preliminary interview for Advance Three Months Certificate Course in Dramatics (part time, non residential)

नीचे दिए गए आलेख को नाटकीय एकालाप के रूप में तैयार करें। आप अपनी पसंद के अनुसार गायन और नृत्य जोड़ सकते हैं।

Prepare the below as dramatic monologue. You may add singing and dancing as per your choice.

For Boys

कालिदास : मैंने बहुत बार अपने सम्बन्ध में सोचा है मल्लिका, और बहुधा इन निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अम्बिका ठीक कहती थी ।

[बाँहें पीछे की ओर फैल जाती हैं और आँखें छत की ओर उठ जाती हैं।]

मैं यहाँ से क्यों नहीं जाना चाहता था ? एक कारण यह भी था कि मुझे अपने पर विश्वास नहीं था। मैं नहीं जानता था कि अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के अनन्तर उस प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैं कैसा अनुभव करूँगा । मन में कहीं यह आशंका थी कि वह वातावरण मुझे छा लेगा और मेरे जीवन की दिशा बदल देगा । और यह आशंका निराधार नहीं थी । [मल्लिका की ओर देखता है ।]

तुम्हें बहुत आश्चर्य हुआ था कि मैं काश्मीर का शासन सम्भालने जा रहा हूँ ? तुम्हें यह बहुत स्वाभाविक लगा होगा ! परन्तु मुझे कुछ भी अस्वाभाविक प्रतीत नहीं होता । अभावपूर्ण जीवन की वह एक स्वाभाविक प्रति-क्रिया थी । सम्भवतः उसमें कहीं उन सबसे प्रतिशोध लेने की भावना भी थी जिन्होंने जब-तब मेरी भर्त्सना की थी, मेरा उपहास उड़ाया था। [ओठ काटकर उठ पड़ता है और झरोखे के निकट

चला जाता है।]

परन्तु मैं यह भी जानता था कि मैं सुखी नहीं हो सकता । मैंने बार-वार अपने को विश्वास दिलाना चाहा कि न्यूनता उस वातावरण में नहीं, मुझमें है। मैं अपने को बदल लूं तो सुखी हो सकता हूँ, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। न तो मैं बदल सका और न सुखी हो सका। अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला, जो कुछ मैंने लिखा उसकी प्रतिलिपियाँ देश-भर में पहुँच गयीं, परन्तु मैंसुखी नहीं हुआ। किसी और के लिए वही वातावरण और जीवन स्वाभाविक हो सकता था। मेरे लिये नहीं था। एक राज्याधिकारी का कार्यक्षेत्र मेरे कार्यक्षेत्र से भिन्न था। मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह से उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है और जिस विशाल क्षेत्र में मुझे रहना चाहिए था उससे हट आया हूं। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली हुई क्षितिज रेखा पर पड़तीं तभी यह अनुभव मुझे चुभता कि मैं उस विशाल से दूर हो गया हूँ। मैं अपने को सहारा देता कि आज नहीं तो कल मैं परिस्थितियों पर वश पा लूंगा और समान रूप से दोनों क्षेत्रों में अपने को बाँट लूंगा, परन्तु मैं स्वयं ही परिस्थितियों के हाथों बनता और प्रेरित होता रहा। जिस कल की मुझे प्रतीक्षा थी वह कल कभी नहीं आया और मैं धीरे-धीरे खण्डित होता गया, होता गया। और एक दिन...एक दिन मैंने अनुभव किया कि मैं सर्वथा टूट गया हूँ। मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसका उस विशालता के साथ कुछ सम्बन्ध था ।

[कुछ क्षण मौन रहता है। फिर टहलने लगता है।] काश्मीर जाते हुए मैं यहाँ से होकर नहीं जाना चाहता था । मुझे लगता था कि यह प्रदेश, यहाँ की पर्वत-श्रृंखला और उपत्यकाएँ मेरे सामने एक मूक प्रश्न का रूप ले लेंगी। फिर भी लोभ का संवरण नहीं हुआ। परन्तु उस बार यहाँ आकर मैं सुखी नहीं हुआ। मुझे अपने से वितृष्णा हुई। उनसे भी वितृष्णा हुई जिन्होंने मेरे आने के दिनको उत्सव की तरह माना। तत्र पहली बार मेरा मन मुक्ति के लिये व्याकुल हुआ था। परन्तु उस समय मुक्त होना सम्भव नहीं था। मैं तब तुमसे मिलने के लिये नहीं आया, क्योंकि भय था कि तुम्हारी आँखें मेरे अस्थिर मन को और अस्थिर कर देंगी। मैं उनसे बचना चाहता था । उसका कुछ भी परिणाम हो सकता था। मैं जानता था, तुमपर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, दूसरे

तुमसे क्या कहेंगे। फिर भी इस सम्बन्ध में निश्चित था कि तुम्हारे मन में विपरीत भाव नहीं आयेगा। और मैं यह आशा लिए हुए चला गया कि तुमसे यह सब कह संकूगा। एक कल ऐसा आयेगा जब मैं और तुम्हें अपने मन के द्वन्द्व का विश्वास दिला सकूंगा। यह नहीं सोचा कि द्वन्द्व एक ही व्यक्ति तक सीमित नहीं होता, परिवर्तन एक ही दिशा का व्याप्त नहीं करता । इसलिये आज यहॉ आकर बहुत व्यर्थता का बोध होता है।

For Girls

स्त्रीः ओह होह फिर घर में कोई नहीं (अन्दर के दरवाज़े की तरफ़ देखकर)
किन्नी होगी ही नहीं जवाब कहाँ से दे ? (बैग को देखकर)
यह हाल है इसका। (फटी किताबें देखकर)
फिर फाड़ लाई एक और किताब । हे भगवान जरासी शर्म नहीं है इस लड़की को रोज़–रोज़ कहॉ से पैसे आ सकते है नई किताबों के लिए। (सोफे के पास आकर) और अशोक बाबू यह कमाई करते हैं दिन–भर (तस्वीरें देखते हुए) एलिजाबेथ टेलर.....आड्रे हेबर्न.....शर्ले मैक्लेन।
जिन्दगी काट रहे है। इन तस्वीरों के साथ।
बड़े साहब वहॉ अपनी कारगुजारी कर गए है। दिन–भर घर पर रहकर आदमी और कुछ नही ंतो अपने कपड़े तो टिकाने पर रख ही सकता है।
मगर नही....इनसे ये भी नहीं होता।
इतना तक नहीं कि चाय पी है तो बर्तन रसोईहार में छोड़ आए, मैं ही आकर उठाऊ।

****